हे भगवान, यह तो अजगर है!

कल्याणी मदान

साढ़े पाँच के अलार्म से रोज़ की तरह आज भी मेरी नींद टूटी। रोज़ की तरह खुद को बिस्तर से खींच कर रोज़मर्रा के कामों में लग गई। दस-साढ़े दस तक सब काम निपट गए। नहा-धो लिया, कपड़े धुल गए। घर के पिछवाड़े उन्हें फैलाने गई। वहाँ मैंने टमाटर, बैंगन, मेथी, पालक और चुकन्दर लगाए हुए हैं। हमारे यहाँ नील गायों, खरगोशों और मोरों का बड़ा आतंक रहता है। सो, इन क्यारियों पर मैंने एक जाला फैंका हुआ है।

घर की सब्ज़ी-भाजी का हालचाल जानने के लिए ज्यों ही मैं और पास गई तो हैरान रह गई। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। हे भगवान, यह तो अजगर है। जाल में फँसा, ज़िन्दा, मगर चोटिल अजगर। पिछले पाँच सालों से इस इलाके में साँपों की डरावनी गाथाएँ सुन रही थी। और आज ठीक मेरे घर के पिछवाड़े ...। आँखों पर यकीन नहीं हुआ। मैंने जल्दी-जल्दी रस्सी पर कपड़े फेंके। और उचक कर देखा। अजगर जाल में बुरी तरह गुत्थम-गुत्था था।

क्यारी के दूसरी ओर देखा तो फिर चौंक गई। वहाँ एक गोह पड़ी थी – अधमरी सी। एक तरफ अजगर था और एक तरफ गोह! बचपन में सुनी शिवाजी और तानाजी की कहानियाँ एकदम से आँखों के सामने कौंध गईं। माँ सुनाती थीं कि कैसे तानाजी ने महल में घुसने के लिए गोह का इस्तेमाल किया था। रस्सी से बँधी गोह पहाड़ी पर बने महल की दीवार से चिपक गई। और उसी रस्सी को पकड़कर मराठा सैनिक पहाड़ी चढ़ गए। और आज एक गोह यहाँ जाल में फँसी हुई है। बेबस-सी। अजगर और इस बड़ी-सी छिपकली के घायल होने का कारण समझ में आने लगा। शायद गोनों की लड़ाई हुई हो और लड़ते-लड़ते वे जाल में आ फँसे हों। गोह तो शान्त पड़ी थी पर अजगर अब भी खुद को छुड़ाने की कोशिश में था। और इस चक्कर में जनाब और-और फँसे जा रहे थे।

खैर, सवाल यह कि अब मैं क्या करूँ? कैम्पस में खबर करती हूँ तो अभी तीन-चार गार्ड लाठियाँ ले कर अवतरित हो जाएँगे और पहले से अधमरे साँप का खात्मा कर डालेंगे। यूँ ही पड़ा रहने देती हूँ तो भी बेहद गरमी और थकान से धीरे-धीरे मर जाएगा। कौन जाने चील-कौए मेरे आँगन में इसकी दावत ही उड़ाने लगें। नहीं.. नहीं दोनों विकल्पों में दम नहीं।

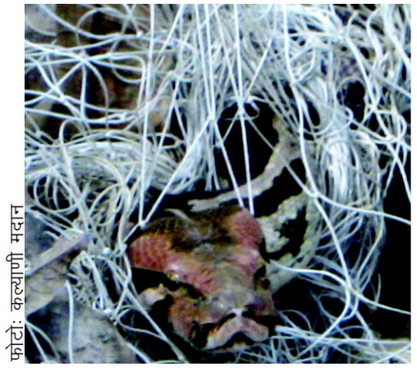

फोटो: कल्याणी मदान

मैंने अपने माली – विनोद, राहुल और पड़ोसन मनाली को आवाज़ दी। घर के कामों में मदद करने वाली शीला जी और गीता भी इस मुहिम में आ जुड़ीं। सभी की राय थी कि बिना देर किए गार्ड को बुलाकर अजगर को मार दिया जाए। शीला जी तो यह भी कहने लगीं कि, "दीदी हट जाइए, नाग एक फुँफकार मारकर आपको अन्दर खींच लेगा।" मैंने उसे आँखें तरेर कर देखा। 70 किलो की मैं और नाग मुझे खींच लेगा! पर अभी तो बहुत कुछ कहा-सुना जाना था। "यदि गोह किसी को काट ले और वहीं पेशाब कर दे तो आदमी बच नहीं सकता। यदि आदमी भी तुरन्त पेशाब कर दे तो सारा ज़हर निकल जाता है।" समझ नहीं आया की हँसूँ या गुस्साऊँ। सबका पूरा ज़ोर साँप को तुरन्त मार डालने पर था। माहौल में एक अजब-सा डर और रोमाँच था। काश, मेरा बेटा कबीर भी आँगन में इतने बड़े अजगर को देख पाता। राहुल और मैंने झट से कैमरा निकालकर फोटो खींचे। पर सवाल तो वहीं का वहीं था – मार दिया जाए कि छोड़ दिया जाए?

तभी बिना आपस में बात किए मैंने और मनाली ने तय कर लिया कि साँप को बचाना है। और सारी सोच उसे बचाने के आसपास घूमने लगी। अजगर (हालाँकि वो बच्चा था) कोई 4-5 फीट लम्बा और मोटा-ताज़ा था। मैंने एक डण्डे से उसका सिर दबाया जिससे उसके खतरनाक लगने वाले फन के आक्रमण और फुँफकारें कम हो जाएँ। जबकि मनाली और विनोद ने कैंची से जाल काटना शुरू कर दिया। चोट वगैरह के बावजूद अजगर को काबू में रखना मुश्किल था। वो पूरे दम-खम के साथ हमें झटके दे रहा था। पूरे ऑपरेशन में कोई आधा घण्टा लगा। बिना ज़रा भी वक्त गँवाए वो पास की झाड़ियों में गायब हो गया। उस सुन्दर जीव को बचा पाने की खुशी में हमने बड़ी गर्म जोशी से हाथ मिलाए।

अब गोह की बारी थी। उसे आज़ाद करने का काम हमने विनोद को सौंपा। शुरू-शुरू में उसके मन में कुछ डर था। पर फिर उसे भी मुक्त कर दिया। तो इस तरह हम दोनों को बचा पाए। इस घटना को हुए कई हफ्ते हो चुके हैं। अजगर न जाने कहाँ लम्बी सर्दियों की तैयारी कर रहा होगा। गोह भी अब जाने कहाँ होगी!

पता नहीं कैसे...

मैं तभी से लगातार सोच रही हूँ। साँप को देखते ही उसे मारने वालों के बारे में। नागपंचमी के दिन साँप को दूध पिलाने, उसकी पूजा करने वालों के बारे में। उसे भोले शंकर का प्रिय मानने वालों के बारे में। मैं सोच रही हूँ कि कैसे हम साँप की पूजा और फिर उसी को मारने की बातें एक साथ कर पाते हैं? कैसे गाय को माता मानने वाले और उसके पीछे मर-मिटने की बातें करने वाले लोग कचरे के ढेर में मुँह मारती गाय को देख पाते हैं? आती-जाती गायों पर धौल जमाते जाते हैं? कुदरत की बनाई हर चीज़ में ईश्वर देखने वाले लोग कैसे पेड़ गिराते हैं, किस क्रूरता से पशुओं को मारते हैं, नदियों को प्रदूषित करते हैं, पहाड़ों को काटकर मैदान बना देते हैं – पता नहीं कैसे...

चित्रः दिलीप चिंचालकर